लोह पुरुष सरदार पटेल : एकता के शिल्पी

सुनिलकुमार वाघेला

छात्र (हिंदी विषय) स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

सरदार पटेल विश्व विध्यालय, वल्लभ विद्यानगर ।

भारत भूमि विविध स्वतंत्रता सेनानियों की जन्मभूमि रही है। जिसने समय पर देश के वीर नायक को देश की स्वाधीनता के आंदोलन के लिए देश की अखंडता एवं गरिमा को बनाए रखने के लिए और देश की एकता में आत्मीयता का नव उन्मेष प्रतिपादन करने के लिए प्रोत्साहित किया है। महात्मा गांधी, वीर भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोझ,लोकमान्य तिलक जैसे महापुरुषों ने भारत भूमि को अपने कर्म, धर्म, एवं साहस से गौरवान्वित किया है। ऐसे ही एक महान वीर नायक है सरदार वल्लभभाई पटेल जिन्हें लोह पुरुष,अखंडता के एकता के शिल्पी सरदार, जननायक, आदि नामों से जाना जाता है। जो उनके कर्तव्य बोधों का परिचायक है। 31 अक्टूबर 1875 में अवतरित हुए सरदार वल्लभभाई पटेल दृढ़ संकल्प के अधिकारी थे। उनके पिता जबीरभाई गुजरात के बोरसद तहसील के करमसद गांव के एक साधारण किसान थे। जिन्होंने अपने संस्कारों का अपने पुत्र पर प्रभाव डाला कि वे देश के विविध स्वतंत्रता सेनानी बन पाए। सरदार वल्लभभाई पटेल पैसे से एक वकील थे जो अपने कर्तव्यों से जनमानस को न्याय दिलाते थे। उस समय का भारत परतंत्र की बेडियो में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजी हुकूमत ने किसानो,मजदूरों,ग्रामजनों एवं आम नागरिकों पर अत्याचार एवं शोषण का कहर जमाया हुआ था। जिसकी बंदिशों को तोड़ने का कार्य सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया।उसका प्रथम चरण था खेड़ा सत्याग्रह। खेड़ा तहसील के किसान पानी की कमी, अती वर्षा, चूहों तथा कीड़ों के प्रकोप से बहुत ही परेशान थे। फसलों के विनाश के कारण वह मिल गुजारी कानून के अनुसार अनाज की जो लगान वसूली जाती थी उसको रोकने के लिए एवं किसानों की दयनीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल ने अहम भूमिका निभाई थी। खेड़ा सत्याग्रह की सफलता ने वल्लभभाई पटेल को आमजन के उन्न नायक नेता के रूप में

प्रतिष्ठित किया था। जिसके परिणाम स्वरुप वे गांधीजी के संपर्क में आए थे। जिसकी स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि " खेड़ा सत्याग्रह राजनीतिक आंदोलन के क्रम में पहला चरण था जिसने वल्लभभाई पटेल को गांधी के निकट ला दिया। वे गांधीजी से इतने प्रभावित हुए की फरवरी 1918 के उपरांत उन्होंने कोट, पेंट,और हैट छोड़कर धोती और कुर्ता पहनना प्रारंभ कर दिया।"(१) इस प्रकार सरदार वल्लभभाई पटेल जनकल्याण के हिमायती कार्यों से देश की स्वाधीनता और स्वतंत्रता में अपनी भूमिका निभाते चले गए। 1924 में अहमदाबाद के नगर निगम बोर्ड के अध्यक्ष ,अध्यक्ष के पद को भी अपने कार्यों से सुशोभित किया जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वच्छता, सफाई, सुरक्षा, जल का निकास, एवं जल की वितरण की सुविधाओं पर विशेष कार्य किया। लोगों को इस कार्य में जुडाने के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वयं झाड़ू और कचरा पेटी को उठाकर शहर के हरिजन के क्षेत्र की सफाई की उन्होंने किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं रखी और लोगों को यह संदेश दिया कि स्वच्छता, संप्रभुता, मानवीय एकता, और एकता की कर्तव्य परायणता राष्ट्रहित के लिए कितनी महत्वपूर्ण है इसका बोध दिया। इस तरह से वे भारत के एकता के कार्य को वह गति दे रहे थे निरंतर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण बनती उनकी भूमिका ने भारतीय जनमानस को एक सार्वभौमत्व वाले महापुरुष को सिद्ध कर रहे थे।

सरदार वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की ख्याति दिलाने वाला आंदोलन था बारडोली सत्याग्रह किसान सत्याग्रह से प्रारंभ हुआ बारडोली सत्याग्रह पुरे देश में चर्चा का केंद्रबिंदु बन गया था जिसके चलते सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के स्तंभ के रूप में स्थापित हुए और एक संगठन कर्ता के रूप में भी प्रतिष्ठित हुए जिससे आगे चलकर भारत में एकता की शिल्पी के पुरोधा बन पाए।

भारत अनेको रियासतों, राज्यों,द्वीप समूहो और खण्डों का एक अखंड भारत था। जिसमें हजारों भाषाएं बोली जाती थी।हजारों धर्म जाति के जनमानस निवास करते थे। जिनकी अपनी सांस्कृतिक विरासत की धरोहर थी। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व यह

सभी जन मानस अनेकता में एकता के परिचायक के रूप में रह रहे थे। लेकिन धीरे-धीरे अंग्रेज अपनी प्रभुता स्थापित करते गए और भारत राष्ट्र की एकता में विविधता स्थापित करने के कुचक्र में सफल रहे। हिंदू मुस्लिम का विभाजन, भारत पाकिस्तान का खंडन जैसे कारणों ने भारत को विखंडित कर दिया उसके बावजूद भी ब्रिटिश सरकार के नेतृत्व में भारत में 17 प्रांत थे और 560 रियासतें थी जिसको एकत्रित करके भारत की अखंडता बनाए रखना एक चुनौती पूर्ण कार्य था। जिसको सरदार वल्लभभाई पटेल ने पूर्ण किया। उन्होंने उस समय देखा था कि भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम ने ब्रिटिश भारत का अंकुश उस समय की भारतीय सरकार को दे दिया था। साथ ही रियासतों के नवाबों के पास यह अधिकार था या कहे यह विकल्प था कि वह चुन सकते थे कि उनको भारत में ही रहना है या नहीं या तो पाकिस्तान में रहना है। यदि उस समय के रियासतों के शासक स्वतंत्र रूप से इस विकल्प का चुनाव करते तो भारत राष्ट्र की गरिमा भौगोलिकता के दृष्टिकोण पर और अखंडता के उद्देश्य पर जो आज पाई जाती है वह उस समय ही खंड-खंड होकर विखंडित हो जाती जिसको एकत्रित करने का श्रेय सरदार वल्लभभाई पटेल को जाता है। जिन्होंने रियासतों के शासको को भारत राष्ट्र में जुड़ने के लिए अनेकों नितियों, मानदंडों,एवं वचनों के द्वारा आकर्षित किया यही सरदार वल्लभभाई पटेल का अतुलनीय कार्य था जिसके चलते वह एकता अखंडता के शिल्पी माने जाते हैं। विनोबा भावे के शब्दों में " पटेल के दो महत्वपूर्ण कार्यो ने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर बना दिया प्रथम बारडोली सत्याग्रह, तथा द्वितीय देसी रियासतों का एकीकरण"।(२) यही एकीकरण देश की एकता का एकीकरण है जिसको सरदार वल्लभभाई पटेल ने पूर्ण किया।

संदर्भ सूची

१ सरदार वल्लभभाई पटेल व्यक्तित्व एवं विचार,डॉ.एन. सी.मेहरोत्रा, डॉ. रंजना कपूर

पृष्ठ नंबर - 24

2 वही, पृष्ठ नंबर - 39

लौह पुरुष सरदार पटेल : राष्ट्र की एकता के शिल्पकार

डॉ. भाविनी एन चौधरी
ऐड हॉक अध्यापक
सी. बी. पटेल आर्टस कॉलेज, नडियाद

सरदार वल्लभभाई पटेल को भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति में से एक माना जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे। सरदार पटेल अपने कठोर अनुशासन, अटूट साहस और दृढ़ निश्चय के कारण वे 'लौह पुरूष' के नाम से प्रसिद्ध हुए। भारत की एकता और अखंडतता के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती देशी रिसायतों का एकीकरण था। सरदार पटेल ने अपनी कुशल कूटनीति दृढ़ निर्णय और राष्ट्रीय भावना के बल पर 562 से अधिक रियासतों का भारत में विलय कराया। सरदार पटेल आजीवन ब्रिटीश शासन के विरोधी रहे थे ब्रिटीश सरकार ने उन्हें कई बार कारावास का दंड दिया था। अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं के बल पर वल्लभभाई ने समय-समय पर अनोखे कार्य किए। सरदार वल्लभभाई का स्वयं अपना जीवन निडरता का जीता-जागता उदाहरण था। बाल्यावस्था में भी वह कभी झूके नहीं थे। अपने वकालत के कार्य के समय और अहमदाबाद नगरपालिका में विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने निडरता पूर्वक जनसेवा की थी।

सरदार पटेल वीर पुरुष थे। देश की जनता सरदार पटेल की कर्मठता और देश के प्रति उनकी निष्ठा एवं किसी भी परिस्थिति से लोहा लेते हुए उसके आगे नतमस्तक न होने वाली उनकी द्रष्टि से परिचित थी। इसलिए देश की प्रजा का भरोसा सरदार पटेल पर था। परतंत्र भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले अग्रणी देशभक्त, इतिहास पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से प्रत्येक व्यक्ति भलीभाँति परिचित है। भारत की एकता तथा अखण्डता के लिए अपना समस्त जीवन न्यौछावर करने वाले इस महान देशरत्न को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता जिसको भारत की जनता 'लौह पुरुष' और 'सरदार' के नाम से अपार आदर सम्मान देथी थी, स्वतंत्र भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के रूप में जिसने ईमानदारी

पूर्ण सफलता औऱ निर्भयता से अपना कर्तव्य निभाया । सरदार पटेल ने अपने जीवनपर्यन्त असमानता, परतंत्रता, उत्पीड़न एवं अन्याय का घोर विरोध किया और उक्त ध्येय की प्राप्ति हेतु जीवनभर संग्राम किया, तथा देश के आजादी की जंग में अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया।

सरदार पटेल ने अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं के बल पर वल्लभभाई ने समय-समय पर अनोखे कार्य किए। त्याग, सेवा, निस्वार्थता, सम्मान, श्रद्धा, स्पष्टता, आशावादिता, दूरदर्शिता, सत्यता, नौतिकता, अनुशासनबद्धता, आत्म-सम्मान, कर्तव्यपरायणता, मर्यादापालन, स्वच्छता-प्रेम, दृढ़ता, निर्णय-क्षमता, निडरता, व्यावहारिकता, राष्ट्र-प्रेम, धर्म-निरपेक्षता व आस्तिकता उनके व्यक्तित्व का भाग थी। सरदार पटेल की निर्भीकता आस्तिकता से जुड़ी हुई थी अपने साथियों और अधीनस्थों को भी सदा नीडर रहकर ही कार्य करने का सन्देश देते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के इस महान यज्ञ में सामान्य भारतीय जनसमुदाय भी अपना सर्वस्व बलिदान करते थ। ऋचा शर्मा के अनुसार गुलामी की जिस आग में सारा देश जल रहा था उसके विरुद्ध स्वतन्त्रता की चाहत रखते चेहरे सभी भारतीय तो नही थे, परन्तु फिर भी अनेक थे इनमें अधिकांश ही नहीं सभी अपने समय के राष्ट्रीय दलों के साथ संयुक्त थे। फिर अपने दल के नेताओं के निर्देशन में स्वतन्त्रता के लिए दृढ़ संकल्प थे, इनमें से कुछ सीधे आक्रमण करते थे कुछ छिपकर सक्रिय थे। कुछ हिंसक मार्ग अपनाते थे, तो कुछ अहिंसक साधना से राष्ट्रीय आन्दोलन में साधक बने हुए थे।

सरदार पटेल से गाँधीजी का सीधा सम्पर्क खेड़ा सत्याग्रह के सिलसिले में हुआ था। गुजरात सभा ने 1917 में गांधीजी को अपना अध्यक्ष बनाया और पंचमहाल जिले के गोधरा शहर में उसका अधिवेशन हुआ। इस सम्मेलन में मुंबई के अधिक्तर राजनीतिक नेता विठ्ठलभाई पटेल, मोहम्मद अली जिन्ना, लोकमान्य तिलक सम्मिलित हुए। गांधीजी ने परिषद की एक कार्यसमिति नियुक्त की जिसे अगली परिषद होने तक जनता की भलाई के लिए निरंतर काम करते रहना था। गांधीजी इस कार्य समिति के अध्यक्ष थे और सरदार पटेल को मंत्री बनाया गया था।

सरदार पटेल पाश्चात्य सुधारकों के विरोधी थे। उनकी चेतनावनी थी। "कुछ लोग पाश्चात्य सुधारों के पुजारी हैं उन्हें चरखे से डेढ़ सौ वर्ष पीछे ले जाने का डर दिखाई दे रहा है। वे यह नहीं देख सकते कि पश्चिमी सुधार जगत की अशांति की जड़ है। राजा-प्रजा के बीच कलह कराने वाला बड़ी-बड़ी सल्तनतों का नाश कराने वाला महान राज्यों को ग्रहो की तरह टकराकर पृथ्वी पर प्रलय कराने वाला और मालिकों तथा मजदूरों के बीच गृहयुद्ध करवाने वाला पश्चिमी सुधार शैतानी शास्त्रों और सामग्री से निर्मित है। इस सुधार का फंदा सारी दुनिया पर जोर के साथ फैलता जा रहा है। ऐसे समय अकेला हिन्दुस्तान उसके विरुद्ध अटल रहकर अपना और संभव हो तो जगत का बचाव करना चाहता है। पाश्चात्य सुधार हिन्दुस्तान में जातिवाद करने की इच्छा रखने वालों के पास उस सुधार को पहचानने की क्या सामग्री है ? हिन्दुस्तान इस सुधार के पीछे दौड़ने में सदा पीछे ही रहेगा। यह इस भूमि के अनुकूल ही नहीं है। आत्मबल को पूजने वाला हिन्दुस्तान इस शैतान के तेज में कभी बहने वाला नहीं है।"

गुजरात में तो सरदार पटेल ने अपने साथियों का उत्साह बनाए रखा लेकिन अन्य प्रांतो जैसे की महाराष्ट्र तथा बंगाल में यह मत जोर पकड़ने लगा कि कोंग्रेसियों को चुनावों में भाग लेकर विधानसभा के भीतर जाना चाहिए और वहाँ सरकार के जन विरोधी कानूनों तथा कार्यक्रमों का विरोध करना चाहिए। जो लोग चुनावों से दूर रहकर गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमको ही पूरा करना चाहते थे, उन्हें अपरिवर्तनवादी कहा गया। सरदार पटेल अपरिवर्तनवादी थे।

गुजरात में बोरसद तालुका चोरी-डकैती के लिए कुख्यात था। सरकार को इलाके में ज्यादा पुलिस की व्यवस्था करनी पड़ी। सितम्बर 1923 में सरकार ने बोरसद तालुके के निवासियों पर 2.5 लाख रूपये का कर लगा दिया। 16 साल से उपर के प्रत्येक व्यक्ति को 2 रूपये 7 आने देना था। सरकार ने बोरसद के लोगों पर कर लगाने की घोषणा की तब लोगों ने इसका विरोध किया और सरदार पटेल से सहायता मांगी। सरदार पटेल ने बोरसद सत्याग्रह का कुशलता से संचालन किया। सरकार ने लोगों की जमीन-जायदाद और ढोर-... हडपने की कोशिश की पर लोगों की एकता के कारण सरकार का यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ।

सरदार पटेल देश की सक्रिय राजनीति में सन् 1917 से आये जलियावाला बाग हत्याकांड में जब निदोर्षों का जनसंहार हुआ उसीके विरोध में उन्होंने बेरिस्ट्री त्याग दी।

सरदार पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल के अंदर-बाहर हुए, हालांकि जस चीज के लिए इतिहासकार हमेशा सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में जानने के लिए इच्छुक रहते हैं, वह थी उनकी और जवाहरलाल नेहरू की प्रतिस्पर्धा। 1929 के लाहौर अधिवेशन में सरदार पटेल ही गांधीजी के बाद दूसरे सबसे प्रबल दावेदार थे किन्तु मुस्लिमों के प्रति सरदार पटेल की हठधर्मिता की वजह से गांधीजी ने उनसे उनका नाम वापस दिलवा दिया।

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पहले पी.वी. मेनन के साथ मिलकर कई देशी रियासतों को भारत में मिलाने के लिए कार्य आरम्भ कर दिया था। उनके आथाक प्रयासों के फल-स्वरूप तीन राज्यों को छोड़ सभी भारत संघ मं सम्मिलित हो गए। 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ को छोड़कर शेष भारतीय रियासतें 'भारत संघ' में सम्मिलित हो चुकी थी। ऐसे में जब जूनागढ के नवाब के विरुद्ध विद्रोह हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा दिया। गांधी के प्रमुख अनुयायी सरदार पटेल ने भी राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढ़ाया। सरदार 1917 में ही गांधी के अनुयायी बन चुके थे और जलियावाला बाग हत्याकाँड के अवसर पर उन्होंने अहमदाबाद की हड़ताल और जुलूस का नेतृत्व करके राजनीतिक आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। इसलिए सन् 1920 में जब काँग्रेस ने कलकत्ता और नागपुर के अधिवेशनों में असहयोग की घोषणा की तो सरदार ने तुरन्त बेरिस्टरी को त्याग दिया। अपने पुत्र-पुत्रियों का सरकारी शिक्षा संस्थाओं में पढ़ना बंध कर दिया। उन्होंने उसी समय असहयोग करने वाले बहुसंख्यक विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा प्रदान करने के लिए गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की और इसके लिए बर्मा तक का दौरा करके दस लाख रूपया इकठ्ठा कर लाये।"

सरदार पटेल को भारत का लौह पुरुष कहा जाता है। गृहमंत्री बनने के बाद भारतीय रियासतों के विलय की जिम्मेदारी उनको ही सौंपी गई थी। उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए छोटी-बड़ी रियासतों का भारत में विलय करवाया। देशी रियासतों का विलय स्वतंत्र भारत की पहली उपलब्धि थी और निर्विवाद रूप से पटेल का इसमें विशेष योगदान था। नीतिगत दृढ़ता के लिए राष्ट्रपिता ने उन्हें और लौह पुरुष की उपाधि दी थी। बिस्मार्क ने जस तरह जर्मनी के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी उसी तरह वल्लभभाई पटेल ने भी आजाद भारत को एक विशाळ राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। बिस्मार्क को जहाँ जर्मनी का आयरन चाँसलर कहा जाता हैं वही सरदार पटेल भारत के लौह पुरुष कहलाते है।

संदर्भः-

1) लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, पद्मश्री लाल बहादुर सिंह चौहान, गाजी प्रकाशन चतुर्थतल रमन टावर संजय फेस, आगरा 2011 पृ. 1
2) भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, कैलाश चन्द्र जैन, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1999 पृ. 24
3) सरदार वल्लभभाई, नरहरि पारीज, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1951 वाल्यूम प्रथम पृ. 89
4) भारतमाता के निर्भय सेनानी, सरदार पटेल श्री राम शर्मा, आचार्य, युग निर्माण योजना प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा पृ. 07